ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

ऋतुराज के काव्य में यथार्थ चेतना

नरेन्द्र कुमार, सहायक आचार्य, हिंदी, शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

साहित्य का संबंध समसामयिक समाज और युग से है। ऐसे में साहित्य व्यक्ति और समाज की रोजमर्रा की जिंदगी में दखल किये बिना नहीं रहता। साहित्य समाज को प्रभावित करता है। साहित्य तत्कालिक समाज का चित्रण करते हुए समाज व व्यक्ति को प्रभावित भी करता है। भले ही साहित्यकार स्वयं क्रांति नहीं करता हो लेकिन क्रांति का मार्ग प्रशस्त अवश्य करता है। जब समाज में अनेक तरह की समस्याएँ, संशय, और पीड़ाएँ हों तो साहित्य व साहित्यकार की जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

ऋतुराज के ही शब्दों में, "यथार्थवादी कविता की प्रकृति राजनीति की प्रकृति से तय होती है। अगर राजनीति अच्छी, सच्ची, संवेदनशील, मानवीय होती है तो कविता में भी सुख, संतोष, उत्साह, प्रसन्नता, रूमान व्यक्त होता है।लेकिन अगर राजनीति कुटिल, निर्मम, असत्यवादी और अमानवीय हो तो कविता जन-सामान्य के असंतोष, दुःख और प्रतिरोध की अभिव्यक्ति होगी।"

ऋतुराज 1960 के दशक के उत्तरार्द्ध में वाम जनवादी कविता धारा के स्फोट के पहले ही सुस्पष्ट जनपक्षधरता के साथ अपना लेखन शुरू कर चुके थे। जब बांग्ला और तेलुगु के बाद हिन्दी में भी अकविता और नंगी पीढ़ी-भूखी पीढ़ी श्मशानी पीढ़ी की मध्यवर्गीय अराजकतावादी लहर उफान पर थी, उस समय भी ऋतुराज इनसे बिना प्रभावित हुए अपनी राह चल रहे थे। और अस्सी व नब्बे के दशकों में वाम जनवादी कविता के भीतर जब नव-रूपवाद की प्रवृत्तियाँ सर उठा रही थीं तब भी ऋतुराज 'ज़माने की इस नयी लहर' से अप्रभावित रहे। ऋतुराज के ही शब्दों में, उनकी यह स्पष्ट मान्यता है कि 'जो लोग कविता से निरी कलात्मकता की अपेक्षा करते हैं, वे कविता के वस्तु-सत्य को गौण रखना चाहते हैं।' लेकिन इसके साथ ही, उनकी कविता में राजनीति या विचारधारा वाचाल या मुखर रूप में, बयान या नारे की तरह कभी भी नहीं आती क्योंकि उनकी यह स्पष्ट धारणा है कि 'कवि अपनी विचारधारा को बिना कलात्मक रूप दिए अवाम पर कोई भरपूर प्रभाव नहीं डाल सकता।' अन्यत्र वह कहते हैं, 'विचार और कलात्मकता के संतुलन पर ही आधुनिक कवि की सफलता या असफलता, शक्ति या दुर्बलता निर्भर करती है।'

ऋतुराज के काव्य संग्रह आशा नाम नदी की कविता 'दुःख जो कविता नहीं हो सकता' में सामान्य व्यक्ति का जीवन संघर्ष चित्रित है एवं उनके दर्द को दिखाया गया है। यह कविता इतनी मारक है कि आत्मा का भीतरी धरातल भी लहूलुहान हो जाता है। इस कविता के प्रथम भाग में कवि लिखते हैं-

'साब जी, आप नंगे फर्श पर मत बैठिए
तनिक यह गमछा ले लीजिए
ओह, यह बुसाता है मैल और पसीने से
साब जी, अपनी कमीज बिछा देता हूँ'

और दूसरे भाग में वे लिखते हैं--

'साब जी, उसे रोने दीजिए
डबलरोटी, बिस्कुट उसे बिल्कुल मत दीजिए
साब जी, उसे भूखे सोने की आदत डालनी होगी
यह एक दिन की बात थोड़े ही है
आप तो चले जाएँगे
हमें तो पूरी ज़िन्दगी इसी तरह काटनी है'

कवि को सामाजिक विषमता पर आक्रोश है, वैयक्तिक अभावों से पीड़ित जनता से उसे सहानुभूति है और शोषकों के वैभव एवं विलास पर वह खुलकर व्यंग्य करता है। देश की वर्तमान दशा में वह दुःखी है। जिस प्रकार राजनीतिक पार्टियां गंठजोड़ करके जनता पर शासन करने के लिए अपने स्वार्थ को सिद्ध कर रहे हैं उन पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं-

भारत के संदर्भ में राजशाही और लोकतंत्र में भेद मिट रहा है
इसकी मिसाल दूसरी क्या हो सकती है कि सारे दलों की
एक मात्र चिंता यह हो कि प्रधान मंत्री कौन होगा ?
भले ही बहुमत मिले या न मिले
गठजोड़ में होने की अभी से कीमतें तय की जा रही हैं
अभी से सत्ता की बंदर-बाट में हिस्से तय हो रहे हैं

कविता का प्राथमिक कार्य अत्याचार के विरुद्ध साहस का संचार करना है और ऋतुराज की कविता 'उस दिन बढ़ई ने भील से जो

कहा' इस कार्य को बहुत प्रभावी ढंग से संपादित करती है :

उस आदमी ने अभी तक तुमसे कुल्हाड़ी नहीं छीनी है
अभी तक तुम्हारा पौरुष जमीन और औरत के लिए मरा नहीं है
प्रेम में हम छीने हुए प्रिय को वापस लेते हैं
मारते हैं उसे जो बिना प्रेम के हमसे छीन लेता है हमारा सुख
लो, मैंने तुम्हारी कुल्हाड़ी में यह नया हत्था लगा दिया है…

ऋतुराज की कविता में जन-जीवन की आशा-आकांक्षा है, वह सामाजिक चेतना से युक्त है तथा उसमें जनवादी स्वर सर्वोपरि हैं। ऋतुराज अभावों से पीड़ित एवं शोषण से त्रस्त जनता के दुख-दर्द को व्यक्त करने वाली जमीन से जुड़े कवि हैं।इनकी कविताओं में समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों और उनके जीवन की सच्चाइयों का चित्रण मिलता है। उनकी कविताएँ समाज की मुख्यधारा से परे उन लोगों के अनुभवों, संघर्षों और अस्मिता को उजागर करती हैं, जो अक्सर अनदेखे रह जाते हैं।

ऋतुराज की कविता ऐसे लोगों को संबोधित है जो बस जिये जा रहे हैं, जिनकी जीने की चाहत बस आज का दिन निपट जाने तक सिमट गया है। ये ऐसे बेघर लोग हैं, जिनसे सरकार घर ही नहीं ज़मीन की रसीदें भी माँग रही है। ये कवि के 'अपने लोग' हैं-

बिल्कुल अकलुषित और बेजान
ये मेरे लोग
धरती बसाते हैं
पर अभी तक भी उजड़े हैं
वक़्त का सैलाब इन्हें
घोंसले-सा काटकर निकल गया है
इनकी आँखों में
बेघर होने का ख़ालीपन है

विस्थापन की समस्या एक सामाजिक आर्थिक और मानवीय मुद्दा है जो तब उत्पन्न होती है जब लोग अपने भूमि, घर या आजीविका के स्रोत से अलग किए जाते हैं । विस्थापित लोगों की समस्या को लेकर वे लिखते हैं -

उन्हें क्या पता कि झाड़ियों की ओट में नहाना कैसा होता है?
और प्रसव के लिए खुले में तनी चादरों के बीच
कितनी पीड़ा होती है।
दुनिया की प्राचीनतम संस्कृति है विस्थापित मनुष्यता।

विकास की अंधी दौड़ के चपेट में आये लोगों के टूटने बिखरने और संघर्ष के ब्योरे हैं। विपरीत जीवन स्थितियों के यांत्रिक संतुलन की धुरी पर टिके विकास को ऋतुराज कभी व्यंग्य के रास्ते, तो कभी विडम्बना के रास्ते सामने रखते हैं।

वह फूल बेच रही है
उसके टोकरे में ताज़ा मोगरे और गुलाब रखे हैं
लेकिन चेहरे पर खून की कमी के चिह्न साफ़ हैं

ऋतुराज समय को थाहने, सूँघने, और अकानने वाले कवि हैं। 'काल से होड़' लेने वाला कवि अपने समय की विसंगतियों और विडंबनाओं से निरपेक्ष नहीं रह सकता। यही कारण है कि उनकी कविता में राजनीतिक पैनापन जानलेवा है। ऋतुराज अपनी बहुत कम कविता में सीधे-सीधे राजनीति से जूझते हैं, लेकिन उनकी अधिकांश कविताएँ राजनीतिक चेतना से लैस होती हैं।सरकार अपनी असफलता और नाकामियाँ बहुत साफगोई से जनता पर ही थोप देती है। उदाहरण के लिए सरकार का आरोप है कि चूंकि किसान ऋण का समायोजन नहीं कर पाते हैं, इसलिए आत्महत्याएँ करते हैं। लेकिन सरकार जब जनता का समायोजन नहीं कर पाती है तो आत्महत्या नहीं करती। ऋतुराज सरकार की इन चालाकियों को हमसे साझा करते हैं-

कल देश जान जायेगा
कि गरीब की चमड़ी के लिए
कौन-सा दल सही नाप के कपड़े पहनायेगा
कौन देगा उसके मुँह में निवाला
बाढ़ और अकाल से
मुक्ति दिलानेवाला देवता कौन होगा ??

और अगर देवी कुपित हुईं
तो
कौन इसका दोष जनता के मत्थे मढ़ेगा ???

ऋतुराज राजनीतिक व्यंग्य से विजयी सरकार में को एक ही झटके में धम्म से जमीन पर गिरा देते हैं एवं देश की वर्तमान समस्याओं पर ध्यान आकर्षित करते हुए लिखते हैं :

तुम धरती स्वीकार करते हो
विजित करते हो जनपद पर जनपद
लेकिन अज्ञान निर्धनता और बीमारी के ही तो राजा हो

जनवादी कवियों नें कुण्ठा, पराजय, मृत्यु, संत्रास और निरर्थकता की जगह जीवन के प्रति आस्था और विश्वास का स्वर प्रबल किया है। इनके पास महानगरीय विडम्बनाओं, मध्यमवर्गीय विद्रूपताओं व निराशापूर्ण माहौल के खिलाफ सामाजिक बदलाव की निश्चित स्वप्नदृष्टि है।

ऋतुराज अपनी कविताओं में आमजन की इन समस्याओं से छुटकारा दिलानें के लिए क्रांति का आहवान भी करते हैं। उनकी कविताएं आमजन को विद्रोह व क्रान्ति का सन्देश देती है। उनकी कविता 'रास्ता' इस प्रकार आमजन को इस शोषणकारी व्यवस्था और सत्ता को बदलने का रास्ता बताती है।

वे इस पूंजीवादी लोकतत्र की कुटिल राजनीतिक चालों को बे नकाब करने के साथ ही उससे पीड़ित जनता की दशा पर चिंता करतें हुए बिना किसी लाग लपेट के सीधे-सीधे कहतें है-

उन्होनें सारे बाग, खेत, नदिया, पहाड और बाजार
हथिया लिये है,
जनता अंधेरी सुरंगों में ठसाठस भरी उनसे मुक्त
होने के लिए निकास ढूंढ रही है।

सत्ता की अंधी और वहशी भूख में आकंठ डूबी आज की राजनीति को 'एक पद' (वोट बैंक) में समेटते हुए कवि ने जहाँ उसके लोकतंत्र विरोधी चरित्र को बेनकाब किया है, वहीं उसके खोखले वादों, दोगले इरादों और अमानवीय आचरण पर तीखे व्यंग्य भी किये हैं-

तुमने कहा दलितों की हत्याएँ हो रही हैं
लो, हम बाबा साहेब का मंदिर बना देते हैं
तुमने कहा, बेटियाँ महिलाएँ सुरक्षित नहीं हैं
लो, उनकी फीसें माफ कर दीं और जगह जगह
बेटी बचाओ के पोस्टर लगा दिये
तुमने कहा अल्पसंख्यकों की उपेक्षा हो रही है
लो, हमने उन्हें मंत्री मंडल में लिया
उनके हाथों में कश्मीर सौंपा
बादशाहों, शेखों से हमारे रिश्ते मजबूत हो रहे हैं
सिर्फ एक पद में इस प्रहसन की सच्चाई बयान हो सकती है
'सत्ता-भूख, सत्ता-भूख', 'वोट बैंक, वोट बैंक'।

ऋतुराज की कविता हमारी भाषा-परम्परा, हमारे सामाजिक मूल्य, हमारी आलोचनात्मक दृष्टि को प्रस्तुत करती है। ये कविताएँ, हमारे वर्तमान पर सवाल खड़े करती हैं। बाज़ार और बाज़ार समय के द्वारा, मनुष्य और मनुष्यता के अवमूल्यन की बात उठाती हैं। परन्तु क्या ऐसा करते हुए वे हमारे भीतर संवेदनात्मक हलचल भी पैदा करती हैं? ऋतुराज की कविताएँ सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक दृष्टि से सही लगती हैं। उनके तर्क स्पष्ट और प्रभावी हैं। परन्तु उनको पढ़ते हुए अक्सर लगता है उनका विचार पक्ष, उनकी तार्किकता उनकी संवेदना पर हावी हो जाती है? इसका एहसास कवि को भी है, वे कहते हैं- 'क्या तुमने राजनीति की भाषा के बरक्स कविता की भाषा को अधिक कारगर बनाने की कोशिश की है?'

कवि का पक्ष सत्य का होता है, मगर वह सत्य का प्रवक्ता नहीं है। क्योंकि ऐसा होने पर वह सत्य को तार्किक और प्राकट्य की भाषा में व्यक्त करने लगेगा। यह काम तो वैज्ञानिकों का है। इसलिए वहाँ रूपक नहीं समरूप हैं। कविता में रेटोरिक भी हृदय के मर्म को ही छूती है। कविता सत्य पर पहुँचे किसी व्यक्ति का आत्म वक्तव्य नहीं है। वह सब तो विचारकों और धर्म-गुरुओं के जिम्मे है। कविता

तो रेगिस्तान में भटके हुए थके हारे मुसाफिर के पैरों में चलने की ताक़त है। भूली हुई स्मृतियों में कोई मार्मिक क्षण के कौंधने की चमक है। वह घबराहट, निराशा और निरर्थकता के अधिक क़रीब है, लेकिन वह इनमें से नहीं। ऋतुराज की भी कविता सत्य का बखान नहीं करती। वह सत्य में हमारी आस्था बनाये रखती है। अंततः एक कविता उम्मीद और आस्था ही तो बचा सकती है। जीवन में, समाज में, भाषा में, लेकिन इस आस्था, इस उम्मीद के टूटने का नाम भी कविता ही है।

मंगलेश डबराल के शब्दों में "ऋतुराज की कविता गरीब, वंचित, बहुत दूर रहने वाले लोगों की ताकत को रेखांकित करती है। वस्तुओं, लोगों और संवेदनाओं के 'आदिवास' के प्रति निरंतर एक खोज और उसे बचाने की चिंता ऋतुराज की रचना में कई स्तरों पर व्यक्त होती रही है। बहुराष्ट्रीय निगमों के इस साम्राज्यवादी समय में ज़्यादातर लोग आशा और प्रसन्नता जैसी चीज़ों के लिए बाज़ार की तरफ देख रहे हैं और उसे खरीद लेने की सुख-भ्रांति में भी रह रहे हैं, लेकिन ऋतुराज के लिए वास्तविक उम्मीद बाज़ार से बाहर घटित होती है। वह बाज़ार विरोधी है और समाज के अत्यंत साधारण मनुष्यों, गरीब आदिवासियों के भीतर निवास करती है।"

ऋतुराज का काव्य यथार्थ केवल बाहरी समाज का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन, प्रकृति, और समय की गहनता को भी चित्रित करता है। उनकी कविताएँ संवेदनशीलता और चेतना का अद्भुत मिश्रण हैं, जो न केवल यथार्थ से परिचित कराती हैं, बल्कि उसे समझने और अनुभव करने की दृष्टि भी देती हैं।

ऋतुराज की कविताएँ समाज में व्याप्त असमानता, अन्याय और शोषण का चित्रण करती हैं। उनके काव्य में हाशिये पर खड़े वर्गों के संघर्ष, उनकी पीड़ा और उनकी आकांक्षाओं का वास्तविक रूप से वर्णन मिलता है । उनकी कविताएँ मजदूरों, किसानों और वंचित वर्गों की दुर्दशा पर गहरी संवेदना व्यक्त करती हैं।

संदर्भ:

1. हम उत्तर मुक्तिबोध हैं : ऋतुराज, कलमकार मंच 2009
2. आशा नाम नदी : ऋतुराज, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2007
3. पुल पर पानी : ऋतुराज
4. लीला मुखारविंद : ऋतुराज
5.बया जनवरी- मार्च 2023 : संपादक गौरीनाथ